International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
May- 2017, Volume-4, Issue-3
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

तुलसीदास और हिंदी आलोचना

डॉ योगेश कुमार यादव

सहायक प्रोफेसर हिन्दी

राजकीय महाविद्यालय नारनौल

पुत्र योग्यतम होता है जो मां वसुधा का सबसे अधिक उसे ही विष पीना पड़ता है बौनों की संस्कृति में लेता जन्म की जब–जब पुरुष विराटाकार अकेला रह कर उसको चाक गरेवा खुद अपना सीना पड़ता है। उक्त पंक्तियां गोस्वामी तुलसीदास पर सटीक बैठती हैं। तुलसी की कविता पर विचार करते समय उनके समय और समाज को बार–बार ध्यान रखने की जरूरत है। अपने समय के सबसे सजग और कालजयी रचनाकार तुलसीदास हिंदी के अनन्य महत्व के कवि हैं। जो रचनाकार अपने समय का प्रतिनिधित्व करता है और अपने मूल में जीवन–संघर्ष और कोई नवीन उद्वेलनकारी प्रवृत्तियों का वाहक बनता है वह कालजयी रचनाकार होता है।

गोस्वामी तुलसीदास की कविता अपनी नवीन उद्वेलनकारी प्रवृत्तियों के कारण इतिहास में एक मोड़ पैदा कर सके इसीलिए भारतीय साहित्य के लिए वह अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

तुलसी लोक के कवि हैं। आम जनता में वह उस समय इतने लोकप्रिय हो चुके थे जब संचार के साधनों का व्यापक अभाव था । यह विचारणीय और अन्वेषण का विषय है । डॉ शिवकुमार मिश्र ने लिखा है–ष्ऐसी स्थिति में सवाल उठता है कि गोस्वामी तुलसीदास को हिंदी भाषी प्रदेश के साधारण जनों के बीच भी जिनकी अत्यंत गहरी और व्यापक पाठ तथा प्रतिष्ठा है, उत्तर भारत के जन समाज के बीच जिनके द्वारा रचित श्रामचरितमानसश एक काव्य–ग्रंथ के रूप में नहीं एक धर्म–ग्रंथ के रूप में मान्य और समादृत है।1

श्राम–कथाश की गोस्वामी जी से पूर्व लंबी परंपरा मिलती है। वाल्मीकि रामायण,अध्यात्म रामायण,हनुमन्नाटक, भवभूति का उत्तर रामचरित, अपभ्रंश में स्वयंभू का पउम चरिउ,प्रसन्नराघव आदि प्रमुख हैं।

तुलसीदास की राम कथा के संदर्भ में अध्ययन करने वाले दो तरह के आलोचक हैं ।प्रथम तरह के आलोचकों का मानना है कि तुलसी ने रामकथा के परंपरागत रुप को युगानुरूप संशोधित कर उसमें मौलिक उद्भावनाओं का संयोजन किया है। कमोबेश सभी आलोचकों का मत है कि तुलसी की राम कथा अपने पूर्व की परंपरा से प्रभावित रही है लेकिन उसमें मौलिक उद्भावनाओं की कमी नहीं है। तुलसी के दूसरे तरह के आलोचकों में राहुल सांकृत्यायन और रांगेय राघव जैसे मार्क्सवादी आलोचक हैं जो तुलसी को अच्छा अनुवादक मानते हैं। तुलसी के अधिकांश आलोचकों ने इस बात को रेखांकित किया है कि तुलसी के श्रामश का स्वरूप परंपरागत राम से व्यापक है। मूलतरू तुलसी के राम भी परम–ब्रह्म हैं– अजर–अमर हैं लेकिन उनका मानवीय रूप आकर्षक और लोकप्रिय है।

वस्तुतः तुलसी महाकवि इसी अर्थ में हैं कि उन्होंने ईश्वरीय राम को सामान्य राम बना दिया है ।उसे आमजन के अधिक नजदीक लाकर खड़ा कर दिया है। लोग अब अपने जीवन–संघर्ष में राम को पिता,पुत्र,राजा,संघर्षशील व्यक्तित्व का धनी के रूप में देखते हैं। तुलसी की लोकप्रियता का यही कारण है। रामकथा की जन व्याप्ति एवं लोक स्वीकृति तुलसीदास की देन है।

तुलसी के राजनीतिक विचारों पर कम लिखा गया है। राजतंत्र तुलसी के राजनीतिक चिंतन का मूल है। वस्तुतः तुलसी जिस समाज में लिख रहे थे वह सामंती समाज था। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने तुलसी के राजनीतिक विचारों को श्सुराजश या श्धर्मराजश 2 कहां है। मार्क्सवादी आलोचक रामविलास शर्मा ने तुलसी को समतावादी समाज के निर्माता के रूप में देखा है ।3

अब सवाल यह उठता है कि राम का राजा रूप कैसा है ? राजा के लिए गोस्वामी जी के क्या मापदंड हैं? इन सवालों पर विचार करते हुए आचार्य शुक्ल,रामविलास शर्मा,विश्वनाथ त्रिपाठी जैसे आलोचकों ने गहन विश्लेषण किया है। इन आलोचकों का मानना है कि राम एक प्रजा हितैषी राजा हैं। यद्यपि राम का शासन भारतीय शास्त्रों के अनुरूप है। राम के शासन में निरंकुश सत्ता का स्थान नहीं के बराबर है । राजा राम के लिए प्रजा सुख ही सर्वोपरि है। तुलसी ने कहा भी है–ष्जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी,सो नृप अवसि नरक अधिकारी।ष्राम से प्रजा सवाल भी कर सकती है। इतना ही स्थान राम राज्य में है।

विचारणीय सवाल यह भी है कि मध्य युग में तुलसी लोकतंत्र की हिमायत करते हैं। सवाल यह भी उठता है कि जब अकबर महान् थे और सब कुछ अच्छा था तो तुलसी को रामराज्य की याद क्यों आई? इसका एक अर्थ यह भी निकलता है कि कहीं न कहीं राम के आदर्शों की कमी जनमानस को महसूस हो रही थी। एक संत तुलसीदास अकबर जैसे विशाल सेना वाले शासक से लड़ाई तो नहीं कर सकते थे ।अपनी कविता के माध्यम से तुलसी का रामराज्य अकबर के प्रतिरोध के रूप में खड़ा नजर आता है। अकबर के शासन के बरक्स रामराज्य की कल्पना तुलसी का बड़ा सपना था।

तुलसी के सामाजिक चिंतन पर सर्वाधिक विचार हुआ है अधिकांश आलोचकों का मत है कि तुलसी का श्कालिकाल वर्णनश मूलतः सामंती समाज का दर्पण है और श्रामराज्य वर्णनश समाजवादी समाज का।4 तुलसी के श्कलिकाल वर्णनश में आए यथार्थ चित्रण को देखकर आचार्य शुक्ल, रामविलास शर्मा जैसे आलोचक उन्हें मध्य युग का सबसे बड़ा कवि कहते हैं। रामराज्य को समन्वयवादी आदर्श मानकर आचार्य शुक्ल,रामविलास शर्मा आदि ने तुलसी को लोक मंगलकारी और समतावादी के रूप में देखा है। वहीं दूसरी ओर राहुल सांकृत्यायन,रांगेय राघव,यशपाल,बच्चन सिंह,रमेश कुंतल मेघ आदि ने इसे कोरा आदर्शवाद ही माना है।

गोस्वामी तुलसीदास के साहित्य की चर्चा में अक्सर वर्णाश्रम व्यवस्था एवं नारी–चित्रण पर सर्वाधिक विवाद रहा है । इस चर्चा को लेकर आलोचकों के भिन्न–भिन्न वर्ग हैं। कुछ आलोचक इन प्रसंगों पर तुलसी का बचाव करते नजर आते हैं। आचार्य शुक्ल,रामविलास शर्मा जैसे विद्वान वर्णाश्रम व्यवस्था,नारी–चित्रण जैसे प्रश्नों पर अपना स्पष्ट एवं तार्किक पक्ष रखते हैं। उन्होंने वर्णाश्रम के प्रति तुलसी के दृष्टिकोण को वेद,पुराण एवं शास्त्र सम्मत समाज के निर्माण वाली मानसिक बनावट का प्रतिफल माना है। इस विचार के विद्वान तुलसी को लोक मंगलकारी और समतावादी मानते हैं।

श्सूद्र द्विजन्ह उपदेसहिग्याना।मेलि जनेऊ लेहहिं कुलाना।श(छंद–99 क–1)

जे बरनाधम तेलि कुम्भाराम।स्वपच किरात कोल कलवारा।श(छन्द–100–क)

इन पंक्तियों को उक्त आलोचक विखंडित हो रही समाज व्यवस्था के प्रति लोकवादी कवि की स्वाभाविक चिंता के रूप में देखते हैं। केवट द्वारा ऋषि को दूर से प्रणाम करना और ऋषि द्वारा केवट को बरबस भेटना उन्होंने महत्वपूर्ण माना है। आलोचकों का दूसरा वर्ग इससे अलग विचार रखता है । वर्णाश्रम व्यवस्था और नारी विषयक तुलसी के विचारों को मुक्तिबोध,रांगेय राघव,राहुल सांकृत्यायन और यशपाल जैसे आलोचक यथास्थितिवादी,प

पुनरुत्थान वादी एवं सामंती चेतना से युक्त मानते हैं। डॉ. लोहिया का भी है विचार है कि–ष्तुलसी एक रक्षक कवि थे, जब चारों ओर से अझेल हमले हों, तो बचाना,थामना,टेक देना शायद ही तुलसी से बढ़कर कोई कर सकता है।ष5

डॉ. लोहिया का मानना है कि तुलसी की यह प्रतिगामी चेतना है जो नए ढांचे में राम कथा के माध्यम से पुरानी टूट रही मान्यताओं को फिर से खड़ा करते हैं। इसके अलावा कुछ अन्य आलोचक जिसमें प्रमुख रुप से विश्वनाथ त्रिपाठी,बच्चन सिंह,शिवकुमार मिश्र आदि का मानना है कि तुलसी की चेतना पर सामंती एवं शास्त्रीय प्रभाव था। यह कवि की सीमा है जिसे स्वीकार किया जाना चाहिए। इसके कारणों की तलाश में उन्होंने पाया कि यहां तुलसी अपने समय–समाज के अंतर्विरोधों का शिकार हुआ है। यह समय अंतर्विरोधों का था अतः तुलसी इन से कैसे बच सकते थे ? उस समाज का यथार्थ था श्कलिकालश जिसका विकल्प श्रामराज्यश में तुलसी तलाश रहे थे।

इसे इस रूप में देखा जाना चाहिए कि अपने समय के सबसे बड़े सर्जक कवि में उस समय का प्रत्येक रूप दिखाई देता है ।अतः अपने समय का अंतर्विरोध भी दिखना स्वभाविक है।

वस्तुतः तुलसी का मूल्यांकन केवल रामचरितमानस,कवितावली आदि रचनाओं के आधार पर किया जाता रहा है। तुलसी के विचारों को समग्रता में समझने की जरूरत है और इसके लिए तुलसी के संपूर्ण साहित्य का अध्ययन जरूरी है। इस कार्य का सामर्थ्य जिसमें होगा वही इस महाकवि के साथ न्याय कर पाएगा। अन्यथा तुलसी को नारी विरोधी और वर्णाश्रम व्यवस्था का पक्षधर रचनाकार मानते रहेंगे जो इस महाकवि के साथ न्याय नहीं होगा।

संदर्भ ग्रंथों की सूची–––

1. भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य–डॉ शिवकुमार मिश्र,पृष्ठ– 141, अभिव्यक्ति प्रकाशन– इलाहाबाद, 2001

2. गोस्वामी तुलसीदास–रामचंद्र शुक्ल, पृष्ठ– 45–46

3. परंपरा का मूल्यांकन– रामविलास शर्मा, पृष्ठ–82–83

4. परंपरा का मूल्यांकन– रामविलास शर्मा,पृष्ठ79

5. वाक्–प्रवेशांक– पृष्ठ– 102